अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय - "डॉ. शंकर शेष के व्यक्तित्व और कृतित्व का सामान्य परिचय" 1 से 31

जीवनी - जन्मस्थल, परिवार, बचपन, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यवसाय, शरीर, पोशाक, आदतें, मृत्यु।

व्यक्तित्व - महान व्यक्तित्व, मिलनसार व्यक्तित्व, आत्मसुधारवादी, चारित्र्य संपन्न, विनम्र तथा पुस्तक प्रेमी, चिंतनशील तथा कुशल प्रशासक, आदर्श अध्यापक हँसोड व्यक्ति, अच्छा वक्ता, आशावादी व्यक्तित्व, प्रसिध्दि विन्मुख।

कृतित्व - नाटक, एकांकी, बालनाटक, उपन्यास, अनूदित नाटक, कहानियाँ, कविता, शोध-एवं समीक्षा, पटकथा। निष्कर्ष :-

द्वितीय अध्याय "हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन" 31 से 53

हिन्दी नाटक काल विभाजन, पूर्ववर्तीकाल में नाटक का अभाव तथा अभाव के कारण, प्रारम्भिक नाटक, हिन्दी का प्रथम नाटक,

(१) भारतेन्दु युगीन नाटय साहित्य

(२) द्विवेदी युगीन नाटय साहित्य

(३) प्रसाद युगीन नाटय साहित्य

प्रसाद कालीन अन्य नाटककार, प्रसादोत्तर युगीन नाटय साहित्य, स्वातंत्र्योत्तर कालखंड और आधुनिक नाटक, एकांकी नाटक, गीतिनाटय, प्रतीक नाटक, रेडियो नाटक।

निष्कर्ष :-

पृष्ठक्रमांक

तृतीय अध्याय - "डॉ.शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय -- 53 to 75
'मूर्तिकार', 'रत्नगर्भा', 'नई सभ्यता के नये नमूने', 'बेटेंवाला बाप', 'तिल का ताड', 'बिन बाती के दीप', 'बाढ का पानी', बंधन अपने अपने', खजुराहों का शिल्पी', 'फन्दी', 'एक और द्रोणाचार्य', 'कालजयी', 'घरौन्दा', 'अरे मायावी सरोवर', 'रक्तबीज', 'पोस्टर', 'राक्षस', 'चेहरे', 'कोमल गांधार', 'आधी रात के बाद'। निष्कर्ष :-

चतुर्थ अध्याय - "'घरौन्दा' नाटक का कथ्य" 76 to 94
घर की समस्या, प्रेम-संघर्ष करूणा, नैतिकता का बोझ', मध्यमवर्गीय जीवन की समस्या, स्त्री-पुरूष संबंध, महानगरीय जीवन, धन की प्राप्ति की समस्या, मध्यवर्गीय घरहीनों की बलवत्तर महत्वाकांक्षा, भारतीय स्त्री के संस्कारों का चित्रण, अर्थतन्त्र में जकडा नियतिवादी दर्शन, अर्थअग्नि से झुलसा मध्यवर्गीय समाज, अभाव ही व्याधियों का सुत्रधार, अर्थ के कारण संस्कृति का अध:पतन, अपाहिज ऊर्जस्विता, षड्यन्त्र की प्रवृत्ति का चित्रण। निष्कर्ष:-

पाँचवाँ अध्याय - "'घरौन्दा' नाटक का शिल्प" 95 to 120
कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य, अभिनयता, रंगमंचियता, शीर्षक। निष्कर्ष :-

उपसंहार। 121 to 125

आधार ग्रंथ-सूची।

संदर्भ ग्रंथ-सूची।